औरत ही क्यों शिकार

उन्होंने पूछा था एक बार
औरत ही क्यों होती है शिकार?
पतित्व के सवालों का,
घर के हवालों का,
भीड़ के बवालों का।
जवाब नहीं किसी के पास
छूटते बस्ते का,
टूटते रिश्ते का,
भयानक रास्ते का।
सिल गए होंठ
औरत की जात पर,
शौहर की बात पर,
डूबती रात पर।
कैसी सहानुभूति
बराबर के हक में,
चरित्र के शक में,
बेटी के पक्ष में।
हां,
उन्होंने पूछा था एक बार,
औरत ही क्यों होती है शिकार?
——————————————